व्यक्तिगत आचरण ,कौटुम्बिक आचरण ,सामाजिक आचरण ,व्यावसायिक आचरण चार पहलुओ से मनुष्य का संपूर्ण आचरण बनता है- □□. मोहन भगवत

माननीय क्षेत्र संघ चालक जी ,माननीय प्रान्त संघ चलक जी,उपस्थित अन्य अधिकारी गण एवं आत्मीय स्वयं सेवक बन्धु,

यहाँ पर हम सब लोग कमाने वाले स्वयं सेवक बैठे हैं ,उसमे बहुत से लोग होंगे जो गत पांच दस वर्षो से स्वयं सेवक हैं लेकिन ऐसे भी बहुत से होंगे जो अपने बचपन से शाखा में आ रहे हैं संघ के कार्यक्रमो में सम्मिलित होकर छोटा मोटा दायित्व लेकर काम करते भी आ रहे हैं | जो नए हैं उनको तो संघ की अभी जो अवस्था चल रही है उसको प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है लेकिन जो पुराने स्वयं सेवक हैं विशेषकर यहाँ जो प्रौढ़ स्वयं सेवक बैठे हैं ४०(चालीस) साल की ऊपर की आयु जिनकी है उन्होंने संघ की पुरानी अवस्था को भी देखा है ,अनुभव किया है | जिस अवस्था में काम करते समय संघ कार्य का संपूर्ण भारत में और विश्व में जो आज दृश्य खड़ा हो गया है उसकी कल्पना करना भी असंभव था | अपना इतिहास 91 वर्षो का है | संघ की शाखा लगी पहला दिन ,संघ के प्रारंभ के दिन पर शाखा नहीं लगी है ,विजयादशमी 1925 को तो बैठक हुई थी | धीरे धीरे कार्यकर्ताओ के अनुभव से शाखा लगने लगी तो पहले दिन मैदान पर जब शाखा लगी होगी तब उस शाखा को देखकर शाखा में सम्मिलित स्वयं सेवको ने भी ये कल्पना नहीं कि होगी की संघ कार्य का इतना भव्य दृश्य देश में खड़ा होगा |

डॉक्टर साब की आँखों के सामने ज़रूर वो दृश्य होगा और उन पर विश्वास कर के स्वयं सेवक चल रहे थे | तो उनकी कल्पना में विस्तार उन्होंने नहीं देखा होगा परंतु आज हम देखते हैं अवस्था बदली है | संघ जब प्रारम्भ हुआ तब उपेक्षा का काला खंड एक हमने झेला | जब हम जो कर रहे हैं उसके महत्व को कोई नहीं समझता और इसीलिए न संघ कार्य के प्रति समाज में न कोई आस्था थी, विरोध भी नहीं था,

न अपेक्षा थी लेकिन जैसे जैसे कार्य बढ़ा उस कार्य के बढ़ने के कारण उसके जो परिणाम होते उसके चमत्कार लोग देखने लगे तब उन चमत्कारों से सावधान होकर विरोध करने वाले भी खड़े हो गए और एक लंबा काला खंड हमने देखा कि सतत विरोध का काला खंड जिसको झेलकर कार्यकर्ताओ ने अपनी जिह्वा के भरोसे ,अपने समर्पण और त्याग के भरोसे कार्य को उस विरोध काले खंड से भी पार किया और आज हम अनुभव करते हैं कि समाज मन में अपने प्रति स्नेह,प्रेम अनुकूलता का ही अनुभव सर्वत्र आ रहा है ,कही पर भी विरोध नही है | सार्वजनिक रूप से विरोध करने वालो के भी मुख में विरोध है मन में विरोध नहीं है | ये प्रत्यक्ष अनुभव अपने कार्यकर्ता कार्य करते समय लेते हैं | और इसीलिए संपूर्ण

समाज के मन में और दुनिया के भी मन में संघ के बारे में बहुत बड़ी बड़ी अपेक्षाए हैं | कार्य का ये दृश्य देखते हुए हमारे मन में विशेषकर उपेक्षा और विरोध के समय से जिन्होंने संघ कार्य में अपना योगदान दिया है इससे अपने उड़ाने स्वयंसेवको के मन में एक समाधान रहता है | लेकिन थोड़ा विचार करने की आवश्यकता है कि दुनिया तो हमको विश्व का सबसे बड़ा अनुशासित संगठन कहती है और देश में संघ जो कहता है वो होता है ऐसी दुनिया कहती है लेकिन ये सत्य है क्या ? हो सकता है विश्व में इतना बड़ा संगठन दूसरा नहीं ये बात सत्य होगी लेकिन हम विश्व के सामने चमत्कार करने तो नहीं निकले थे | हम तो अपने संपूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने का काम लेकर चले हैं | उसकी तुलना में देखेंगे तो विश्व में हम सबसे बड़े होंगे लेकिन जितना हमको चाहिए उतना हम बड़े हुए हैं क्या ? तो हम आँखे खोलकर देखते हैं तो ध्यान में आता है कि अभी हम बहुत पीछे हैं| संपूर्ण हिन्दू समाज हम हिन्दू की व्याप्ति बताते हैं कौन हिन्दू है ?

अखंड भारत की भारत माता के रूप में भक्ति करने वाला जिसके पूर्वज हिन्दू थे और जो आज भी अपने सनातनी हिन्दू संस्कृति के आधार पर जीवन को खड़ा करने का प्रयास कर रहा है ,अपने जीवन को और समाज के जीवन को | वो हिन्दू है ऐसा हम कहते हैं अब इस परिभाषा को लेकर देखेंगे तो भारत में अहिन्दू ढूंढना मुश्किल है |अनेक भाषा,अनेक पंथ,संप्रदाय,कुछ विदेश से आकर यहाँ बस गई हुई पूजाएं |ये सब होने के बाद भी लगभग सारा समाज अपने आप को भारत माता का पुत्र मानता है | हिन्दू पूर्वजो के सब वंशज है ये तो वैज्ञानिक सत्य है| और कोई चाहे न चाहे भारतीय संस्कृति के उस अक्षुण्य धारा की छाप सबके व्यवहार पर है ये भी सत्य है | कोई भले ही अपने आपको हिन्दू न कहे लेकिन छोटी मोटी बातों में उसका व्यवहार तो हिन्दू स्वभाव से ही होता है |इंग्लैंड के अरबस्तान से होता नहीं , ये तो अनुभव है | तो संपूर्ण हिन्दू समाज यानी कितना बड़ा ? तो एक अनुमान है 125 करोड़ | भारत के अंदर और दुनिया का मिलाकर और अगर जो भारतीय पंथ संप्रदाय जो हिन्दू धर्म की उपासना नहीं करते हैं उनको छोड़ भी देते हैं तो भी 100 करोड़ ये तो पक्की संख्या है | अब इन 100 करोड़ में संघ के स्वयं सेवक कितने हैं? संघ के स्वयं सेवक और संघ के हितैषी सबको मिलाकर शिशु से 100 साल तक के आयु की गिनती भी की ,तो भी ये संख्या 60 लाख के ऊपर नहीं जाती | तो हम कैसे कह सकते हैं हमने संपूर्ण हिदू सम्माज को संगठित कर लिया ? फिर हम कहेंगे कि भई संपूर्ण हिन्दू समाज का संगठन यानी प्रत्येक व्यक्ति स्वयं सेवक नहीं बनेगा लेकिन पर्याप्त संख्या में स्वयं सेवक होंगे जिससे वातावरण बनेगा और वातावरण में सब लोग वैसा आचरण करेंगे, तो ठीक है वातावरण बनाने वाली संख्या हमको क्या बताई गई ? तो डॉक्टर साब का प्रसिद्द वाक्य सबको पता है जनसँख्या के ग्रामीण जनसँख्या में 1 % और शहरी जनसँख्या में 3% ,पूर्ण गणवेष धारी तृतीय वर्ष शिक्षित प्रतिघ्निन स्वयं सेवक चाहिए | तृतीय वर्ष शिक्षितो की संख्या तो और कम है ,प्रतिघ्निन स्वयं सेवको की संख्या तो और कम है |गणवेष धारी स्वयं सेवको की संख्या और भी कम है परंतु इसका अर्थ दूसरा भी है | गणवेष धारी यानी जिसको देखने से पता चलता है कि वो स्वयं सेवक है जैसा इसका आचरण है ,वो गणवेष धारी है | कौन-से रंग की पैंट पहनता है?हाफ पैंट पहनता है कि फुल पैंट पहनता है ? टोपी लगता

है की नहीं लगता है ? ये तो जो दिखने वाला गणवेष है उसको हम नापते हैं लेकिन वास्तव में गणवेष यानी एक दर्शन है | दर्शन से पता चलता है की ये एक स्वयं सेवक है या नहीं,उसका आचरण वैसा है | प्रतिघ्निन है यानी कृत संकल्प है की वह हिन्दू धर्म,हिन्दू संस्कृति का संरक्षण कर हिन्दू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का घटक बनकर आजन्म व्रत पालन करता है ,वो प्रतिघ्निन है ,ये अपनी प्रतिज्ञा है |

ऐसा संकल्प मन में रखकर जो उसको पूर्ण करने का प्रयास करता है वो प्रतिघ्निन है | और तृतीय वर्ष शिक्षित है यानी संघ कार्य करते समय आवश्यक सारे कला कौशल का ज्ञाता है ,तघ्न्य है ,उसमे कुशल है |

60 लाख हम स्वयं सेवको की संख्या कहते हैं ,उसमे से ऐसे कितने हैं? और इसे लोग शहरी भाग में 1% और ग्रामीण अंचल में 3% है क्या ? तो 1०० करोड़ में 6० लाख ,प्रतिशत आप निकल लीजिये | ये अभी सबका मिलाकर 1% भी नहीं हुआ है | सौ करोड़ में एक करोड़ चाहिए | अभी उसके लिए भी 4० लाख कम है और अगर तृतीय वर्ष शिक्षित ,गणवेष धारी लगाएंगे तो ये संख्या और बढ़ानी पड़ेगी | सारांश केवल अपने कार्य के विस्तार की बात भी करते हैं | तो अभी हमको समाधान करने के लिए अवसर नहीं है|

अनुकूलता का लाभ लेकर अपने कार्य विस्तार में लग जाने का ये मौका है | अभी बहुत बढ़ना है |पांच गुना आगे जाना है | सारे भारत में पौने सात लाख स्थान है |हमारी शाखाए खींच तानकर 60 हजार स्थानों पर है | हमको अपनी शाखाओ को कम से कम एक लाख स्थानों तक ले जाना पड़ेगा और वो शाखाए यानी जहाँ केवल ध्वज लगने का कार्यक्रम होता है केवल ऐसा नहीं है | शाखा यानी जिसमे से कार्यकर्ता निर्माण होता है और शाखा यानी रोज़ ऐसे एकत्र आने वाले स्वयं सेवक अपने अभिसरण से अपनी बस्ती में या अपने गाँव में एक विशिष्ट वातावरण उत्पन्न करने वाले कर्तृत्व संपन्न सक्रिय स्वयं सेवक है |ऐसे स्वयं सेवक जहा से नित्य तैयार होते हैं उसको शाखा कहते हैं | ऐसे केंद्र हम को एक लाख चाहिए | अभी और काम करने का अवसर है | दुनिया को आश्चर्य हो रहा है ,दुनिया को विश्वास है ,दुनिया को आनंद हो रहा है उसमे भूलने का अवसर नहीं है | हमको और बहुत काम बढ़ाने की आवश्यकता है | और केवल एक पहलू का विचार करते हैं ,अपने कार्य के विस्तार का,अपने कार्य की व्याप्ति का तो ये ध्यान में बात आती है | लेकिन बात यहाँ रूकती नहीं है क्योंकि आज लोग ऐसा मानते हैं की दुनिया में जितने भले काम होने हैं वो सब संघ वालो को ही करने हैं |

तो समाज में समरसता किसको लाना है ? संघ वालो ने लाना है| और बाकी सब लोग उसको भंग करने का प्रयास करते हैं तरह तरह की बातें उबार कर | वो तो वैसी है लेकिन आप जो लोग हैं इसीलिए हमारा विश्वास है | आप लोग जल्दी काम करो ऐसा बताने वाले आपको भी मिलते होंगे | मुझे आजकल बहुत मिल रहे हैं | सरकार को ठीक करो ऐसा कई लोग आकर हमको कहते हैं | अरे सरकार एक अलग

बात है ,हमलोग राजनीति में नहीं हैं | हमलोग शाखा चलाते हैं हमारा अनौपचारिक काम है| संघ का अपना रजिस्ट्रेशन भी नहीं है सरकार से हमारा सम्बन्ध ही नहीं है कुछ लेकिन लोगो की अपेक्षा है इतना बड़ा काम भी संघ करे और छोटा काम भी संघ करे | पत्र आता है ,पत्र आया नागपुर से नागपुर में ही आया | नागपुर में गीतांजलि टॉकीज है,वो टाकीज के मेनेजर का पत्र आया पुरानी बात है ,२० साल पहले की बात है तबसे ये अपेक्षा है |

सेक्रेटरी आर एस एस ,(मैं नागपुर का प्रचारक था उस समय),तो सेक्रेटरी आर एस एस वाला पत्र मेरे पास भेज गया | पोस्टकार्ड था इसीलिए पढ़ लिया | ये कहा था की हमारा टॉकीज है ,गुंडा बस्ती में है ,रोज़ झगड़ा फसाद होते रहता है | जो कैश रोज़ आती है सिनेमा देखने वालो की, वो सुरक्षित नहीं है | हमको अच्छे हट्टे कट्टे प्रामाणिक लोग चाहिए | आज समाज में ऐसा है जो हट्टा कट्टा है वो प्रामाणिक नहीं होता वो गुंडा गर्दी करता है अर जो प्रामाणिक है वो इसीलिए प्रामाणिक है क्योंकि वो दुर्बल है | हट्टे कट्टे होकर भी प्रामाणिक रहने वाले और प्रामाणिक होकर भी सामना करने की हिम्मत रखने वाले लोग केवल संघ के पास है तो आपके कुछ बेरोजगार तरुण होंगे तो हमारे पास भेजो हमको बुकिंग क्लर्क और अकाउंटेंट चाहिए ,करीब २५ लोग चाहिए | गीतांजलि टॉकीज चलाने से सरकार चलाने तक सारे काम कौन करे ?संघ ही करे | अब हमको तो समाज को ये सिखाना है कि तुम्हारे काम और कोई करने वाला नहीं है संघ को भी ठेका मत दो | अपना काम करने के लिए लायक तुमको बनना पड़ेगा ,लायक बनाने का काम संघ में होता है | तो यहाँ आकर लायक बनो और जो काम आवश्यक है वो काम करने में लग जाओ |

"संगठन बढे चलो ,सुपंथ पर बढे चलो | हो भला समाज का वो काम सब किये चलो "

ये सिखाना भी पड़ेगा और समाज इस शिक्षा को ग्रहण भी नहीं करता तब तक कुछ कुछ काम हमको करें भी पड़ेंगे क्योंकि वास्तव में करने वाला कोई है ही नहीं | और अपने आज शक्ति है और उस शक्ति को हमने यही सिखाया है "हो भला समाज का वो काम सब किये चलो " | तो काम भी करें पड़ेंगे | एक तरफ अपने संगठन कि व्याप्ति विस्तार दुसरे तरफ आ[ने संगठन से नित्य निरंतर योग्य कार्यकर्ताओ का निर्माण और तीसरे तरफ समाजकी आशा अपेक्षाओं को यथा संभव और यथोचित मर्यादा में पूर्ण करना | ये तीनो काम करते हुए हमको आगे बढ़ना पड़ेगा | और ऐसा जब सोचते हैं तब एक बात ध्यान में आती है कि वास्तव में ये काम कर सकने कि क्षमता किसकी है ? विस्तार व दृढ़ीकरण में सब आयोग्य स्वयं सेवक लग सकते हैं | नए स्थान पर शाखा खोलने के लिए विस्तारक जाना है तो आंठवी क्लास के ऊपर का स्वयं सेवक जाकर कर सकता है | अच्छे कार्यकर्ता ,विद्यार्थी शाखा में भी गढ़ने वाले जूनियर कॉलेज में पढ़ने वाले मुख्या शिक्षक कार्यवाह हैं परंतु सुयोग्य कार्यकर्ताओ का निर्माण पूरे संघ में सब शाखाओ में योग्य रूप में चले और समाज की अपेक्षाओं को पूर्ण करने वाला काम भी चले और निर्मित स्वयं सेवको के समाज में अभिसरण के आधार पर समाज में हम जैसी कल्पना करते हैं वैसा आचरण का वातावरण उत्पन्न हो ,ये काम विद्यार्थी नहीं कर सकता |उसकी आयु कम है ,उसको

अनुभव कम है ,उसको अभी सीखना है और समाज में उसका कोई स्थान भी नहीं है | नौजवान होगा अच्छी आयु का होगा लेकिन विवाह हुआ नहीं,कमाई शुरू हुई नहीं तब तक वो समाज कि दृष्टि से लड़का ही है,बच्चा ही है |बहुत अच्छी बातें वो कहेगा भी समाज में परंतु समाज ये नही मानेगा कि उसमे कुछ दम है | और 15 दिन के बाद उसकी कही पर कमाई शुरू हो जाती है नौकरो लग जाती है ,साल भर में उसका विवाह भी हो जाता है और एक गृहस्थ के नाते प्रतिवर्ष अपनी कमाई पर अपनी परिवार को चलाने वाला बन जाता हुई तो उसको समाज गंभीरता से सुनता है क्योंकि कमाने वाला अपनी कमाई के कारण ही समाज का घटक नागरिक माना जाता है,उसकी बात पर विश्वास रखा जाता है | अब इसको अगर ध्यान में रखते हैं तो नब्बे साल के पहले का संघ और आज का संघ (इसमें एक और अंतर हमारे ध्यान में आता है) संघ के प्रारंभिक दिनों में लगभग 1950-52 तक संघ में जो लोग मिलते थे सामान्यतः सामान आयु के लोग रहते थे,तरुण रहते थे | बिल्कुल प्रारंभिक दिनों में तो संघ में विद्यार्थी ही अधिक थे | व्यवसायी बहुत कम थे,डॉक्टर साब थे पर वो व्यवसाय करते नहीं थे और उनके मित्र मंडल में कुछ व्यवसायी लोग थे बाकी सब कौन थे? स्कूल में, कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थी उस समय संघ छोटा था अपेक्षा भी नहीं थी ,कालांतर में एक अपेक्षा उत्पन्न हो गई कि हिन्दू समाज पर किसीका आक्रमण होता है तो बचाव में संघ वाले सामने खड़े रहे ,आक्रमण का जवाब दे तो एक ही काम समाज अपेक्षा करता था कि संघ वाले दंड लेकर खड़े रहे | हिन्दू समाज कि क्षति मार्किट में नहीं होने दी |और सब संघ के लड़के थे,संघ के बच्चे थे और कुछ नहीं था इसीलिए उस समय हम क्या विचार करते थे शीरमरकर्णिका तीन कितने स्वयं सेवको को आती है ? एक विरूद्ध चार दंड खेलने वाले कितने लोग हैं ? समता करने वाला एक एक गण प्रत्येक शाखा में है कि नहीं ? ये हमारे चिंता के विषय रहते थे | अचार पद्धिति लागू हो कि नहीं क्योंकि उतना ही करना संभव था | विद्यार्थी वर्ग कम अनुभव वाला कच्ची आयु का हाथ में था उसको अच्छा बनाना यही काम और तरुनाई शक्ति अपने पास थी उसके आधार पर अपने समाज का बचाव यही एक काम था | अब जैसा मैंने कहा वैसे समाज कि अपेक्षाए बहुत हो गई हैं | पर्यावरण काम करो ,जल संधारण काम करो ,ग्राम विकास का काम करो ,इधर सेवा करो ,उधर सेवा करो ,बचाने के लिए सब करो | और हमारा चित्र भी हम देखते हैं तो हमारे पास सब पीढियो के स्वयं सेवक हैं प्रत्यक्ष अपने काम में पांच पीढ़िया संघ स्थान पर देखने को मिलते हैं | गणवेश के कार्यक्रमो में कभी कभी चित्र निकलते हैं लोग | तो फोटो का अपने प्रमाण बढ़ना नहीं चाहिए |फोटोग्राफ,ऑटोग्राफ,चैनल,फूलमाला ,से दूर रहना परंतु समाज में बहुत ज़ोर से चल रहा है ये सब तो कभी अपने स्वयं सेवक भी फोटो निकाल देते हैं |शिविर में अथवा गणवेश के कार्यक्रम में तो दादाजी हैं, पिताजी हैं ,पुत्र है,पौत्र भी है |सब गणवेश में उपस्थित हैं उनका फोटो भी पांचजन्य में छपता है ,चार पीढी | पांच पीढ़ी प्रत्यक्ष देखते हैं संघ में|शिशु से लेकर प्रौढ़ तक |तो सब प्रकार कि क्षमता वाले स्वयं सेवक हैं अपने पास | तो व्यवसायी स्वयं सेवको को कौनसा काम करना है ,उनकी स्थिति क्या है ,उनके पास स्टेटस है,समाज ने उनको नागरिक मान लिया है |व्यवसायी स्वयं सेवक कभी कोई विषय रखे तो गंभीरता से समाज सुनेगा |उनके पास अनुभव है तरुणी व्यवसाइयों के साथ तो शारीरिक क्षमता भी

है,भागदौड़ करने कि शक्ति भी है तो फिर हम व्यवसायी स्वयं सेवको को जो करने के काम हैं और उसके लिए शाखा में जो सीखने के विषय हैं उसमे अब थोड़ा अंतर करके अब हम चल सकते हैं,चलना चाहिए | चालीस साल के नीचे जिन्हें हम तरुण व्यवसायी कहते हैं उनसे अपेक्षा है कि विस्तार दृढ़ीकरण सहित व्यक्ति निर्माण के कार्य में और इतने साल में व्यक्ति निर्माण होने के फलस्वरूप समाज जीवन के विभिन्न अंगो में चलने वाले व्यवस्था परिवर्तन के कार्य में यानी विविध संगठनो में ,समाज परिवर्तन के कार्य में यानी गतिविधियों में बौद्धिक लड़ाई के विभिन्न कार्यो में ,प्रवासी कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है जो शाखा की कार्य पद्धिति को बारीकी से जानते हैं अच्छी तरह जानते हैं ,भागदौड़ कर सकते हैं शाखा की कार्यपद्धिति में जो करना है उसका पहले उदहारण रखना पड़ता है | शीरमरकर्णिका तीन किस पुस्तक में आपको पढ़ने को मिलेगी ? वो सन्दर्भ देके कम नहीं चलता करके बताना पड़ता है | वो करके बताने की भी क्षमता रहती है और इसीलिए सर्वत्र प्रवासी कार्यकर्ताओ की पूर्ती तरुण व्यवसायी शाखाओ में से होनी चाहिए | तरुण व्यवसायी शाखा चल रही है और नगर प्रचार प्रमुख मिल नहीं रहा हैऐसा होना नहीं है | फिर वो तरुण व्यवसायी की शाखा नहीं चलती ,दिखती है लेकिन है नहीं ||उस शाखा में जो होना चाहिए वो हो नहीं रहा है ,नहीं तो प्रचार प्रमुख कहा है कहा है ? ढूंढना नहीं पड़ता | तरुण व्यवसायी शाखा चल रही है और कुटुंब प्रबोधन गतिविधि के लिए नगर का कोई प्रमुख नहीं मिल रहा है ऐसा होना नहीं चाहिए प्रवासी कार्यकर्ताओ की सर्वत्र आपूर्ति कर सकने वाले कार्यकर्ता तरुण व्यवसायी शाखा से निर्माण होनी चाहिए और दूसरी बात है की समाज में उनको स्थान है ,उनको मानते हैं इसीलियते जहाँ समाज को सक्रिय करना पड़ता है,अंग्रेजी में कहते हैं mass mobilization |तरुण व्यवसायी शाखा की अपने बस्ती का अथवा अपने ग्राम का mass mobilization की क्षमता होनी चाहिए | वैसा उनका संपर्क होना चाहिए उस बस्ती में उनके प्रति वैसा स्नेह होना चाहिए उस गाँव में उनके प्रति वैसी एक आशा बननी चाहिए की इनका बताया हुआ हमको करना है | स्वदेशी जागरण मंच की सभा है ,तरुण व्यवसायी शाखा चल रही है और उस बस्ती में से उस सभा में कोई नहीं गए ये कैसे हो सकता है ? तरुण व्यवसायी शाखा के स्वयंसेवक तो जाएंगे ही पर जाते समय एक एक स्वयं सेवक 5-10 घरो के लोग अपने साथ लेकर जाएगा | इस क्षमता के कार्यकर्ता तरुण व्यवसायी शाखा में उत्पन्न होने चाहिए इसीलिए तरुण व्यवसायी शाखाओ के शारीरिक,बौद्धिक कार्यक्रम किस प्रकार के होने चाहिए ? ये हमको सोचना है|

जो विद्यार्थी शाखा है उसके कार्यक्रम तो अपने पहले से ही चल रहे हैं वैसे ही रहेंगे क्योंकि वहा एक ही काम होना है व्यक्ति निर्माण और शाखा के उपक्रमो के द्वारा बस्ती में सर्वत्र एक वातावरण | वो काम बदला नहीं है उनका इसिलए वही कार्यक्रम चलेंगे आग्रह पूर्वक चलेंगे,अच्छी तरह चलेंगे,उत्कृष्ट चलेंगे | लेकिन आज तरुण व्यबसायी शाखाओ से अपेक्षा दूसरी है तो वहा कैसे शारीरिक कार्यक्रम होने चाहिए ,वह कैसे बौद्धिक विषय होने चाहिए ? ,वहा कैसी चर्चा होनी चाहिए ? तरुण व्यवसायी शाखाओ के उपक्रम किस प्रकार के होने चाहिए ? प्रत्येक शाखा में इसका चिंतन होना चाहये| उसके आधार पर तरुण व्यवसायी शाखाओ का कार्यक्रम बनना चाहिए और इसी आधार पर तरुण व्यवसायी शाखाओ का

मूल्याङ्कन भी होना चाहिए | विद्यार्थी शाखा तो हम देखेंगे की संख्या कितनी रहती है ? गणवेश कितने लोगो ने बनाया ? उत्कृष्ट शारीरिक प्रदर्शन करने वाले कितने लोग हैं ? सब सुभाषित कंठस्थ करने वाले कितने लोग हैं ? मासिक बौद्धिक होता है कि नहीं होता है ? भगवा ध्वज गुरु क्यों इसका उत्तर देने वाले उस शाखा में कितने हैं ? ये सारी बातें वह देखेंगे ? तरुण व्यवसायी शाखा में ये विषय तो देखेंगे ही क्योंकि अब वो तरुण हो गए पहले तो विद्यार्थी थे ही | उस पाठ्यक्रम में जो हुआ वो उनको मालूम है ही परंतु और भी बातें देखेंगे की इस तरु व्यवसायी शाखा से विभिन्न कार्यो में गतिविधियों में ,संगठनो में,संघ के कार्य में ,अन्यान्य संस्थाओ में ,न्यासों में समाज की सारी गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रवासी कार्यकर्ता कितने मिले ? प्रतिवर्ष 2-3 कार्यकर्ता देने वाली ये शाखा है की नहीं | और समाज में जो अच्छी अच्छी विचारधाराओ की राष्ट्रीय गतिविधियां चलती हैं उन गतिविधियोंमें सारे समाज को सहभागी करने के लिए अपने बस्ती अथवा गाँव का चलन बढ़ाना mobilisation करना इसकी क्षमता इस शाखा के स्वयंसेवको में है की नहीं | इसके आधार पर तरुण व्यवसायी शाखाओ का मूल्याङ्कन होगा |

और प्रौढ़ व्यवसायी शाखाओ में और एक बात जुड़ जाती है | प्रौढ़ व्यक्ति सामान्यतः समाज में आदरणीय होता है,सम्मानीय होता है | उसकी आयु को देखकर उसकी बात का लोग सम्मान करते हैं उसकी बात सुनते हैं | एकाध प्रौढ़ व्यक्ति कही खड़ा रहा उसने कहा की ऐसा करो ऐसा मत करो तो लोगो के मानने की सम्भावना बहुत अधिक होती है | और आज संघ पर पूरे समाज का विश्वास है | संघ अच्छा है ,स्वयंसेवक अच्छे हैं मात्र इतना नहीं है | संघ जो हम को करने को बताता है वो करने में अपना कल्याण है ,ये विश्वास समाज में है | और इसीलिए संघ आज कोई दिशा देगा तो वैसा आचरण करने के लिए समाज के लोग तैयार हैं | ये काम ऐसा करो ,ये काम मत करो | इस काम में ये सुधार करो ऐसा अगर स्वयंसेवक जाकर कहते हैं ,संघ के स्वयंसेवक हैं इसीलिए उनकी बात मानी जाएगी | समाज अपने आचरण में परिवर्तन करने के लिए संघ स्वयं सेवको पर विश्वास रखता है | ऐसी अवस्था में ये परिवर्तन का कार्य समाज में चलाना क्योंकि आखिर हम करना क्या चाहते हैं ? संघ नाम का एक प्रभावी संगठन खड़ा करके उसके प्रभाव में सारे देश को रखना ये अपना काम नहीं है | ये करना पड़ता है जो कार्य हमको करना है उसके लिए एक स्टेशन ये भी है ,एक पड़ाव ये भी है | इसीलिए उसको हम करते हैं लेकिन ये हमारा गंतव्य नहीं है हमारा गंतव्य तो है की हिन्दू समाज का आचरण बदले | कुछ दकियानूसी पुरानी ओढ़िया लेकर चला है,अंधविश्वासों की भरमार है उससे मुक्त हो जाए | आपस की भेद दृष्टि छोड़कर समरसता का आचरण करे | स्वार्थ का आचरण अब तक करता था अब देश के लिए जिए मरे | आधुनिक समस्याओ का उत्तर अपने पारिवारिक आचरण से वो दे| और इसीलिए समाज में परिवर्तन लाने का काम हमको करना है और आज समाज उसके लिए अनुकूल है | अपनी भी शक्ति पर्याप्त बड़ी हो गई है और इसके बारे में अगर प्रौढ़ आयु का स्वयंसेवक कुछ कहे तो उसका समाज में वो स्थान है | इसीलिए समाज परिवर्तन का कार्य या गतिविधिया ,सामाजिक समरसता ,ग्राम विकास ,गौ संवर्धन ,धर्म जागरण समन्वय ,कुटुंब प्रबोधन ,अभी पांच को हम मानते हैं| और भी हो सकते हैं ,आगे आ भी सकती है | जल संधारण के क्षेत्र में सारे द्वष में स्वयंसेवक काम कर रहे हैं कल चालकर वो भी एक गतिविधि

बन सकती है ,पर्यावरण के क्षेत्र में स्वयंसेवको ने काम करना प्रारम्भ किया है उसकी भी गतिविधि बन सकती है |ऐसे अनेक क्षेत्रो में जाकर काम करना है | अपने बस्ती में,अपने गाँव में ,अपने बस्ती के अपने गाँव के परिवारों में उस प्रकार का आचरण हो इसीलिए इन गतिविधियों को ले जाना है | ये काम उनको करना पड़ेगा और प्रौढ़ स्वयंसेवको की इस सक्रियता का समर्थन बाकी स्वयं सेवको को करना पड़ेगा ,कैसे ? परिवर्तन होता है उदहारण से | परिवर्तन उपदेश से नहीं होता है | जैस आचरण चाहिए उस आचरण का उदाहरण रखना पड़ता है | और आचरण का उदहारण केवल कमाने वाले गृहस्थ स्वयंसेवक रख सकते हैं | क्योंकि आचरण का व्यक्तिगत आचरण मात्र एक पहलू है| व्यक्ति अच्छा है सब स्वयं सेवक ऐसे बन सकते हैं| विद्यार्थी स्वयंसेवक भी ,व्यक्तिगत शुद्ध आचरण का उदहारण समाज के सामने रख सकते हैं ,रखना चाहये क्योंकि आज समाज अपना अनुसरण करने की मनः स्थिति में है और इसीलिए समाज में उचित आचरण करने वाला स्वयंसेवक आज के समाज की आवश्यकता है | संघ की शेख में जो देखते हैं ,सुनते हैं ,जिसके लिए प्रशिक्षित होते हैं ,वो 24 घंटे के अपने प्रभाव में प्रकट करना ये प्रत्येक स्वयंसेवक का कर्तव्य है | और विद्यार्थी स्वयं सेवक तब सीखेंगे जब कमाने वाले स्वयंसेवक अपना व्यक्तिगत आचरण वैसा रखेंगे | शाखा में अनुशासन है जीवन में नहीं है,काम नही होगा | अभी लोग देख रहे हैं अभी इस बहार के वातावरण में ये भी परिवर्तन है पहले संघ की संख्या देखते थे लोग,संघ की सेवा देखते थे लोग| अब लोग संघ के आदर्श आचरण को समझ रहे हैं ,उसको देख रहे हैं और वो आचरण निर्माण करने वाली शाखा में कौन सी प्रक्रिया चलती है जिससे ऐसा होता है | इस और धीरे धीरे उनकी दृष्टि जा रही है | अब पत्रकारों के भो प्रश्न बदल रह हैं |

परसो नागपुर में एक बड़ा कार्यक्रम हुआ जितने चार्टेड अककॉउंटेंट ,कॉस्ट अककॉउंटेंट ऐसे जो लोग हैं नागपुर में सब ,अर्थ क्षेत्र में संपन्नता रखने वाले,कार्य करने वाले उन सब का एक सम्मलेन रखा गया| 700-800 ऐसे तरुण उपस्थित थे कार्यक्रम के पहले उनको पुछा गया की संघ चालक जी आएँगे वो एक विषय पर भाषण देंगे उस पर प्रश्नोत्तर होंगे तो आपके मत से कौन सा विषय सह संघ चालक जी को भाषण में रखना चाहिए ? इसके पहले 1 -2 साल पहले अगर ऐसा प्रश्न रखते थे तो वो राजनीती के बात करते और कोई बात करते लेकिन इस बार जो उन्होंने विषय दिया सबने मिलकर तय किया वो था "चरित्र निर्माण से राष्ट्र निर्माण" | वो स्वयं सेवक नहीं थे सब नए लोग थे | ये संघ चरित्र निर्माण करता है ,व्यक्ति में चरित्र उत्पन करता है तो राष्ट्र निर्माण उससे होता कैसे है? बताओ हमको | ये जिज्ञासा अब समाज में हो रही है और इसीलिए जो बाला साहब ने कहा था उनके समय में की संघ का social evaluation करो ,संघ को political angel से मत देखो,वो अब समाज करने जा रहा है तो ये हमारे लिए बहुत अच्छा अवसर है | हम सजगता पूर्वक अपने व्यक्तिगत आचरण का उदहारण संपूर्ण समाज में सहजता से रखते चले जाएंगे | हमको करना और कुछ नहीं है विचार तो हमारा वैसा ही है | आदते भी शाखा में बनती हैं | सावधान रहना है प्रत्येक कदम पर गलती से भी गलती न हो | पहले कोई देखता नहीं था तो हम सावधान नहीं रहते थे गलतिया हो जाती थी | हम ठीक भी कर लेते थे संभाल भी लेते थे | अब गलतिया होना समाज को एक शॉक देगा |और इसीलिए सावधान रहकर व्यक्तिगत आचरण को

ठीक रखना सब स्वयं सेवक कर सकते हैं | व्यवसायी स्वयंसेवको ने तो करना ही चाहिए,उद्योगी स्वयंसेवको का बस ये ही काम है परंतु जीवन के अनेक पहलू हैं | व्यक्तिगत जीवन एक पहलू है जो विद्यार्थी अवस्था तक सीमित रहता है उसके बाद अपने परिवार का कमाने वाला प्रतिनिधि है वो गृहस्थ है | और इसीलिए संघ जो बातें समाज में करने को कहता है वो संघ स्वयंसेवको ने अपने घर परिवार में लागू करी की नहीं ये समाज देखेगा | आप हमको ऐसा रहने को कह रहे हैं आप का परिवार आज के ज़माने में हमारे सामने ऐसा रहता है की नहीं रहता है लोग देखेंगे | जो हम बोल रहे हैं परिवर्तन की बात वो उनको हमारे परिवार के आचरण में दिखी तो अनुकरण ज़रोरर करेंगे नहीं दिखी तो हमारे विचार के लिए हमारी स्तुति करेगा लेकिन हमारे करने का अनुकरण नहीं करेगा क्योंकि आचरण का एक पहलू कौटुम्बिक आचरण ये भी है | हम लोग कमाने वाले लोग हैं ,अपने कमाई के उद्योग में हम कैसा आचरण करते हैं ? प्रमाणिकता ,अनुशासन वाली सारी बातें हम जहा कमाई का काम करते हैं वहाँ भी हमारे आचरण में है की नहीं ? लोग देखेंगे | और ये सारी बातें अपने सामाजिक व्यवहार में हम प्रकट करते हैं की नहीं ये भी लोग देखेंगे | व्यक्तिगत आचरण ,कौटुम्बिक आचरण ,सामाजिक आचरण ,व्यावसायिक आचरण चार पहलुओ से मनुष्य का संपूर्ण आचरण बनता है , जो संपूर्ण आचरण करने का अवसर केवल कमाने वाले व्यावसायिक गृहस्थ स्वयंसेवको को मिलता है | जिनकी गृहस्थी अभी बानी नहीं उनको केवल एक ही आचरण करने को मिलता है वो है व्यक्तिगत | क्योंकि उनके कुटुंब में वो प्रमुख नहीं है | उनकी गृहस्थी नहीं है इसीलिए कौटुम्बिक आचरण को ठीक रखना उसको ठीक से प्रतिनिधि करना ,इसका दायित्व अन्य लोगो का हो जाता है | कमाने नहीं चले हैं तो व्यावसायिक आचरण का प्रश्न ही नहीं है | और इसीलिए सामाजिक आचरण में कोई स्थान नहीं है | सामाजिक आचरण तो गृहस्थों का देखा जाता है ,कमाने वालो का देखा जाता है | कमाने वाले गृहस्थ स्वयंसेवको का चारो पहलुओ से आचरण देखकर उस उदहारण का अनुकरण लोग करेंगे | तब समाज परिवर्तन आएगा |

तो व्यक्ति निर्माण के अपने कार्य में ,अपने संघ कार्य के ,शाखाओ के कार्य के ,विस्तार दृढ़ीकरण में ,विविध संगठनों में,गतिविधियों में ,अन्यान्य उपक्रम संस्थाए ,विद्यालय ,बैंक ,अन्यान्य सेवा करने वाले न्यास ,समाज के अच्छे अच्छे काम | यहाँ श्री गणेश विसर्जन समिति बनी ऐसे ऐसे काम समाज के चलते हैं ,ऐसे सब कार्यो के लिए कार्यकर्ता देना | समाज को विभिन्न राष्ट्रीय कार्यो में,राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय करने के लिए उसमे चलन पैदा करना mobilisation |

समाज परिवर्तन के लिए गतिविधियां सारे समाज तक पहुचाना अपनी बस्ती में,अपने गाँव में उनको प्रारम्भ करना और इन सबको करते समय चारो पहलुओ से आचरण का उत्तम उदहारण संपूर्ण समाज में रखना ,ये अपने लिए संघ कार्य है | विद्यार्थी के लिए हम बताएंगे की रोज़ शाखा में जाना | मन लगाके वहाँ पे कार्यक्रम करके अपने आप में अच्छे संस्कारो को पैदा करना ,एक दोस्त बनाकर साल में काम से काम एक नया व्यक्ति संघ में लाना और संघ जो कहेगा वो काम करने के लिए तैयार रहना

ये तुम्हारा काम है | उद्योगी स्वयं सेवको के लिए ये चार बातें और जुड़ जाती हैं प्रवासी कार्यकर्ताओ की आपूर्ति , समाज का mobilisation , गतिविधियों का विस्तार अपने अपने कार्य क्षेत्र में ,और अपने आचरण से समाज के परिवर्तित आचरण का उदहारण बनना | इन चार कामो को हमको और करना है क्योंकि हम संघ के पुराने स्वयंसेवक हैं ,समाज में स्थापित स्वयंसेवक हैं ,अधिक प्रवीण स्वयंसेवक हैं | ऐसे अगर हम संघ कार्यो को आगे ले जाएंगे तो इतना अपना स्वयंसेवको का विस्तार है ,कमाने वाले स्वयंसेवको की इतनी बड़ी संख्या है ,समाज में संपर्क है ,अपने हितैषी लोगो का एक बहुत बड़ा सर्किल है सारे देश में | आज समाज के सब सज्जन ,हम बताएंगे उस काम में आने के लये तैयार हैं | अपने कार्यो को हमारे साथ पूरक बनाने के लिए तैयार हैं ,उनका भी एक बहुत बड़ा विस्तार देश में है | उसको साथ लेकर समाज की सारे अपेक्षाओं को पूरा करते करते समाज को इस प्रकार ,अपना भाग्य अपने हाथ में लेकर चलने वाला ,समाज बनाने का काम भी एक तरफ आगे चलेगा और विद्यार्थियों में जो अपना काम चलता है उसमे इस कार्य को आगे बढ़ाने वाले नए नए कार्यकर्ताओ की आपूर्ति वहाँ के व्यक्ति निर्माण के द्वारा भी भविष्यकाल में होती रहेगी | ऐसा हम करते चले तो अनुकूलता की स्थिति ये है की आने वाले पंद्रह बीस वर्षो में हम जिस समाज की कल्पना भारतवर्ष में करते हैं उस प्रकार का समाज खड़ा होता हुआ हम इसी देह में इन्ही आँखों से देख सकते हैं | डॉक्टर साब का ये इतिहास था की ऐसा संगठित हिन्दू समाज में इन्ही आँखों से इसी देह में देखूंगा | लेकिन उनका सपना उनके जीवन में पूरा नहीं हो सका | हम सौभाग्यशाली इसीलिए हैं की हम उस जमाने में संघ के कार्य कार्यकर्ता हैं,स्वयंसेवक हैं जिस समाज की स्थिति में ,समय की अवस्था में अगर इस प्रकार हम कार्य करते हैं तो इस स्वप्न को साकार करना हमारे लिए अत्यंत संभव है | करने की आवश्यकता है और इसीलिए हम लोगो को इसका चिंतन करना चाहिए की इसके अनुसार हमने शाखा की साधना नित्य और उत्कट और प्रखर बनाते हुए हमको इस दिशा में सक्रिय होकर आगे बढ़ना चाहिए | इतना एक निवेदन आज के प्रसंग में आपके सामने रखता हु |